

1944 On Gratification

Note: Mahendra was just under 6 year old

26-6-44
स्फुट विचार संग्रह
मैंने क्या सोचा है

प्रस्ताव :-
लोग कहते हैं कि उनमें देवता गणेशादिके
दर्शन करनेको जानेपर तो हमले काम प्रोत्साहन मिलता
है. जिखले कि सुंहे तो सीधा होता है, पर ^{अच्छे} जितनों के
देन-दशन करनेपर तो वह भी नहीं बरही होता ?
मैंने सुना और सोचने लगा - क्या यह यथार्थ है ?
श्री गौरी देव लक्ष्मी तो उनका कहना ~~सच~~ सच ही लगता है. पर
जब गंभीरतासे मैंने उसपर विचार किया तो अन्ततः
है उनपरिणाम — गणेश-दर्शन पर मिलने वाला
प्रसाद तो भाव-प्रसाद है, भाव भाव का इलाज
कि जानेपर भाव-कार को १-२ क्षणके लिए सुंहे सीधा
किया है, पर उसीके लिए अत्यंत कोसना जग देती है
जो कि प्रकृतिको निराकुल नहीं होने देती. और उस
प्रसाद से अत्यंत दुःखी जीवको तृप्त करनेके लिए
पेले पर्वत का पुत्र. बजाये किशोरी देवीपना खती है
और इस प्रकार प्रकृत्य उत्पत्तिर पिछड़ियाँ लोभनी
जाता है. पर नीलाग जितनेके दर्शन करनेपर यह
बात नहीं. किन्तु वहां स्वर्गा प्रसाद भाव-प्रसाद
मिलता है. जितने परिणामों वह शक्ति प्राप्त होती है
जो कि एक लक्ष्य समाप्त तक अनिश्चिरी पर अनन्तमा
सुखसाधन करता है।